ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हुआ आंख का सफल प्रत्यारोपण

डा. विनय अरोड़ा एवं डा. शची श्रीवास्तव : प्रत्यारोपण के कुशल विशेषज्ञ

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) ईएसआई कॉरपोरेशन मुख्यालय द्वारा सहयोग करना तो दूर तमाम तरह की बाधाएं खड़ी करने के बावजूद यहां के विशेषज्ञ डॉक्टरों के कदम आगे बढ़ने से रुक नहीं पा रहे।

औद्योगिक दुर्घटना के कारण आंखों की रौशनी खो चुके एक मज़दूर का सफल कॉर्निया ट्रांसप्लांट करके उन्हें बीते 9 अगस्त को नई आंख लगा दी गई और जल्द ही दूसरे मरीजों को भी लगाने की तैयारी है। इस सफल प्रत्यारोपण के चलते इन मज़दूरों के जीवन में छाया अंधेरा दूर हो गया है। अब वे पहले की तरह किसी भी सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन-यापन एवं काम-काज कर सकेंगे।

कारखानों में काम करते समय इस तरह की दुर्घटनाएं हो जाना एक आम बात है। इसके लिये वे कारखानेदार तो दोषी हैं ही जो अपने कर्मकारों को औद्योगिक चश्मे प्रदान नहीं करते, कर्मकार भी कम दोषी नहीं हैं जो अपनी आंखों की सुरक्षा के लिये उचित उपाय एवं सावधानी नहीं बरतते। दूसरी ओर मज़दूरों के वेतन से नियमित वसूली करने वाला ईएसआई कॉरपोरेशन भी ऐसे दुर्घटनाग्रस्त मज़दूरों के इलाज की ओर कोई ध्यान देने की जरूरत नहीं समझता रहा है।

कॉर्पोरेशन ऐसे मज़दूरों को कुछ पेंशन एवं मुआवज़ा देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री करता रहा है, जबकि आंखों की रौशनी के बदले कोई भी मुआवजा पर्याप्त नहीं हो सकता।

आंखों के इस काम के लिये बीते करीब डेढ़ साल से आई बैंक स्थापित करने का प्रयास हो रहा था। इसमें सबसे बड़ी विशेष सराहनीय भूमिका प्रोफेसर (डॉ.) शशि वशिष्ठ की रही है। खुद कैंसर की मरीज़ होते हुए भी उन्होंने इस प्रोजेक्ट को अपनी सेवानिवृत्ति (31 अगस्त) से पहले-पहले सिरे चढ़ा दिया। फिलहाल इस शल्य चिकित्सा के लिये आवश्यकतानुसार डॉक्टर डॉ. विनय अरोड़ा को बुलाया जाता है। यानी कि इस काम के लिये किसी स्थायी विशेषज्ञ डॉक्टर को नौकरी पर नहीं रखा गया है।

अब जांच भी होगी : 510 बेड के अस्पताल में 950 मरीज़ कैसे ?

क्षमता से अधिक मरीजों का इलाज करना भी एक दोष माना जा रहा है। ईएसआईसी मुख्यालय में मौजूद भरोसेमंद सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अब इस बात की भी जांच की जायेगी कि इस अस्पताल में क्षमता से लगभग दोगुने मरीजों को कैसे ठूंस-ठूंस कर न केवल भरा जाता है बल्कि उनका सफ़लतापूर्वक इलाज भी किया जा रहा है।

दरअसल मुख्याल में बैठे हरामखोर एवं जनविरोधी कमिश्नरों की फौज, बजाय यहां पर्याप्त स्टाफ़ उपलब्ध कराने के, इस बात की जांच कराने की सोच रही है कि क्या इतने अधिक मरीज़ों का इलाज करना सम्भव हो सकता है? इतना ही नहीं उनकी यह भी सोच है कि जब बिना स्टाफ़ के ही काम चल रहा है तो और अधिक स्टाफ़ की क्या जरूरत है।

इससे बड़ा और दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि क्षमता से कहीं अधिक काम करने वाले अस्पताल की जांच करने की बात कही जा रही है। क्या उनका यही दोष है कि उन्होंने 300-400 मरीजों को रेफ़र करने की बजाय खुद इलाज करने का जिम्मा ले लिया? इससे भी बड़ा दुर्भाग्य

दीपिका गोविल : आखिर कब तक निभाओगी इतनी दुश्मनी मजदूरों से

तो यह है कि बसई दारापुर जैसे उन अस्पतालों की जांच करने की बात नहीं होती जहां क्षमता से भी आधे मरीजों का इलाज होता है और स्टाफ़ की भरमार है। संदर्भवश सुधी पाठक यह भी जान लें कि बसई दारापुर अस्पताल का सत्यानाश करने वाले पहले डॉक्टर दीपक शर्मा को और उनके बाद इस अस्पताल का बंटाधार करने वाली डॉक्टर दीपिका गोविल को पुरस्कारस्वरूप मुख्यालय में कमिश्नर बनाकर बैठा दिया गया, जबकि वे नौकरी में रखने के लायक ही नहीं होने चाहिये।

मुख्यालय में मौजूद भरोसेमंद सूत्र यह भी बताते हैं कि जब फ़रीदाबाद वालों ने डीजी के सामने स्टाफ़ की कमी का रोना रोते हुए डायलिसिस यूनिट का हवाला दिया तो कमिश्नर डॉ. दीपिका गोविल ने डीजी को बताया कि बसई में 10 नहीं बल्कि 32 डायलिसिस प्रतिदिन होते हैं और स्टाफ़ की संख्या 26 न होकर मात्र 16 है। यद्यपि उनकी यह सूचना जांच का विषय है, फिर भी डीजी ने इतना तो कहा ही कि 70-80 डायलिसिस करने वालों को कम से कम 32 का स्टाफ़ तो मिलना ही चाहिये। डीजी ने कह दिया और कमिश्नर गोविल ने सुन लिया लेकिन नतीजे के नाम पर ढाक के वही तीन पात।

इतना ही नहीं, पर्याप्त स्टाफ़ न देकर तो मुख्यालय फरीदाबाद अस्पताल से दुश्मनी निभा ही रहा है, आये दिन दिल्ली, नोएडा से मरीज़ों को इस अस्पताल में रेफ़र करके कार्यभार को अधिक से अधिक बढ़वाता जा रहा है। श्रममंत्री भूपेन्द्र सिंह यादव को यह सब खेल नजर क्यों नहीं आता? क्या वे मध्य प्रदेश और राजस्थान के चुनावों में प्रचार करन के लिये ही मंत्री बने बैठे हैं?

बड़खल झील पर प्रधानमंत्री का जन्मदिन मनाने की हसरत रह न जाए

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) उत्सवजीवी प्रधानमंत्री का जन्मोत्सव भाजपाई इस बार भी बड़खल झील पर नहीं मना पाएंगे। केंद्रीय मंत्री किशनपाल गूजर, विधायक सीमा त्रिखा सहित अनेक भाजपा नेताओं ने प्रधानमंत्री का जन्मदिन बड़खल झील में मनाने की घोषणा की थी। अभी तक तो झील भरने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे। आसार भला कैसे नजर आ सकते हैं जब तक सीवर का गंदा पानी वहां पहुंचाने का नाला पूरा बन कर तैयार न हो जाए। झील का नजारा देखने के लिए बनाया जाने वाला कथित मरीन ड्राइव आधा अधूरा ही पड़ा है।

घोषणावीर भाजपाई नेता खट्टर की नौ साल की सरकार में फरीदाबाद में नगर निगम से लेकर लगभग हर विभाग में छोटे बड़े घोटाले ही खुले, यानी सरकार इस शहर में अपने दम पर कोई खास विकास कार्य नहीं करा सकी। अरबों रुपये बर्बाद करने के बावजूद स्मार्ट सिटी तैयार नहीं हो सकी। जनता को सड़क, पेयजल, ड्रेनेज और सफाई जैसी आधारभूत सुविधाएं दिलाने में भी सरकार नाकाम ही साबित हुई है।

नौ साल में विकास तो कुछ करा नहीं पाए अब जनता को दिखाने के लिए बार-बार बड़खल झील का ढिंढोरा पीटा जा रहा है। मुख्यमंत्री खट्टर ने 2015 में ही इसका रूप लौटाने की घोषणा की लेकिन कोई काम नहीं किया गया। 2019 में लोकसभा व विधानसभा चुनाव के पहले एक बार फिर विधायक सीमा त्रिखा, सांसद किशनपाल गूजर और सीएम खट्टर ने बड़खल का राग अलापना शुरू किया था। जून 2022 तक बड़खल झील विकास को तरसती रही। जुलाई 2022 में मंत्री किशनपाल गूजर ने पत्रकार वार्ता कर प्रधानमंत्री का जन्मदिन बड़खल झील पर मनाने की घोषणा की थी। भाजपाई घोषणावीरों की तरह ही किशनपाल का दावा भी जुमला ही साबित हुआ। खिसियाए भाजपाई 2023 का जन्मदिन झील पर मनाने का दावा करने लगे।

बड़खल झील तो छोड़ ही दीजिए अभी मुख्य सड़क से इस झील तक जाने वाला रास्ता ही नहीं बन पाया है। झील के किनारे अरावली के पत्थरों को गढ़ कर बनाए गए गेट, सीढ़ियों और रास्ते को तोड़कर नैसर्गिक सुंदरता खत्म कर सीमेंट से बनाई जा रही दीवारें भी अभी पूरी नहीं हो पाई हैं। सेक्टर 21 में एसटीपी से तथाकथित शोधित जल को भेजने की तैयारियां भी अभी आधी अधूरी हैं। केवल ट्रायल लाइन से ही पानी डाला जा रहा है जो अपर्याप्त है।

पूरा शहर जानता है कि नेता इस तरह की घोषणा कर जनता के बीच चर्चा का विषय बने रहना चाहते हैं, अभी तो इनमें झील के निर्माण का श्रेय लेने की होड़ लगेगी। लोकसभा चुनाव अब दिसंबर में हों या मई में किशनपाल गूजर झील बनवाने की उपलब्धि अपने नाम करना चाहेंगे।

विधायक सीमा त्रिखा भी झील के जीर्णोद्धार का श्रेय लेना चाहती हैं, यही कारण है कि वह धीमी गति से चल रहे जीर्णोद्धार के काम को गति देने का दबाव नहीं बना रही हैं। झील को पर्याप्त रूप से भरने के लिए वर्षाजल का भी बड़ा योगदान रहेगा, समझा जा रहा है कि इसका उद्घाटन लोकसभा चुनाव के बाद ही हो सकेगा। खैर, उद्घाटन तो जब भी हो इस बार प्रधानमंत्री का जन्मदिन बड़खल झील पर मनाने की बात भाजपाइयों की हसरत ही रहने वाली है।

संदर्भवश सुधी पाठक जान लें कि इस झील को बरसाती पानी से भरने के लिए प्रकृति प्रेमियों ने एक योजना नगर निगम व उक्त तमाम नेताओं को प्रस्तुत की थी। मजे की बात तो यह थी कि उस योजना में सरकार की एक चवन्नी भी खर्च नहीं होनी थी, और शुद्ध वर्षाजल से झील को भर जाना था, इसके बावजूद करदाता के धन पर गिद्ध दृष्टि रखने वाले नेताओं व अफसरों ने इसे सीवर से गंदे पानी से भरने की योजना बना दी, जिस पर पचास से सौ करोड़ रुपये तक खर्चा होने की संभावना है, सरकार इसका कभी खुलासा नहीं करती।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।